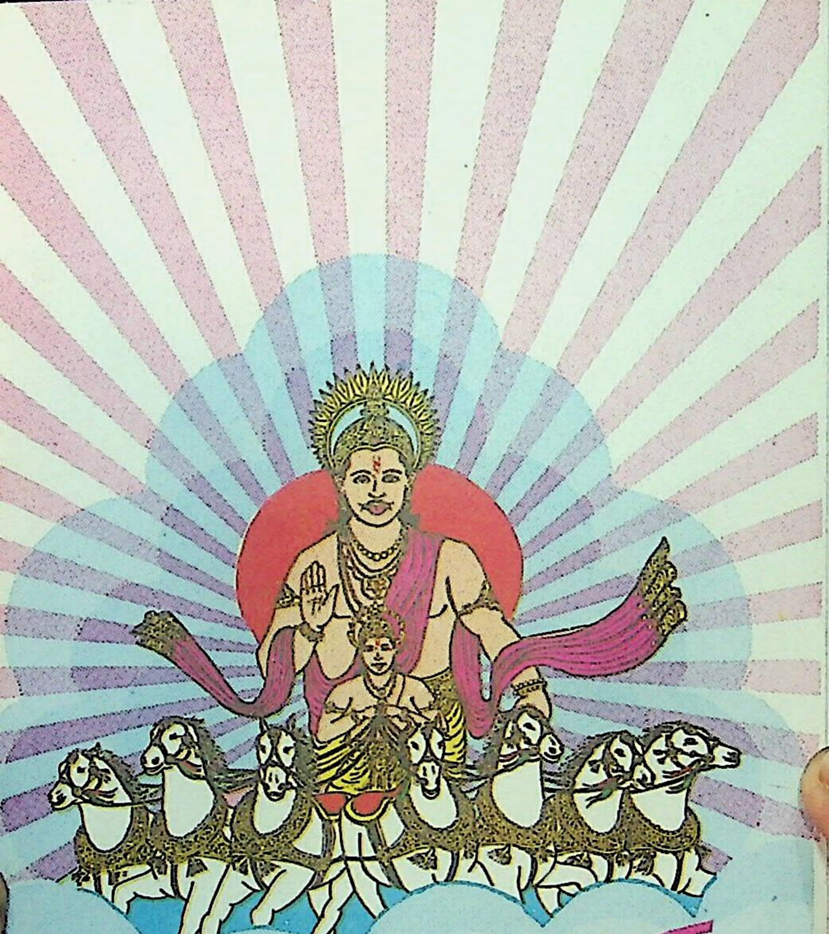


# आदित्यहृदयम्

श्रीगणेशाय नमः ।

# आदित्यहृदयम् ।

बूंदीनिवासि-पंडित-रामप्रतापशर्मकृत-
भाषाटीकासहितम् ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास™,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : फरवरी २०१५, संवत् २०७१

मूल्य : २५ रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
**खेमराज श्रीकृष्णदास,™**
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.



Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

॥ श्रीहरिः ॥

अथ

भाषाटीकासहितं

# आदित्यहृदयम् ।

आचम्य देशकालौ संकीर्त्य ममारोग्यावा-
प्तये श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं द्वादश-
नमस्काराख्यं कर्म करिष्ये ॥

गंगाविष्णवीरितो रामप्रतापो रवितुष्टये ॥
आदित्यहृदयस्याहं कुर्वे टीकां नृभाषया ॥ १ ॥

आचमनकरके आज अमुक देशमें अमुक मास और दिनमें अपने आरोग्य प्राप्ति निमित्त श्रीसविता सूर्यनारायणकी प्रसन्नताके लिये द्वादश नमस्कारनामक कर्म करूंगा यह संकल्प है ॥

## ध्यानम् ।

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसंनिविष्टः ॥ केयूरवान्मकरकु-
ण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतश-

ङ्गचक्रः ॥ १ ॥ एकचक्ररथो यस्य दिव्यः
कनकभूषितः ॥ स मे भवतु सुप्रीतः पद्म-
हस्तो दिवाकरः ॥ २ ॥ मित्राय नमः ॥
रवये नमः ॥ सूर्याय नमः ॥ भानवे नमः ॥
खगाय नमः ॥ पूष्णे नमः ॥ हिरण्य-
गर्भाय नमः ॥ मरीचये नमः ॥ आदि-
त्याय नमः ॥ सवित्रे नमः ॥ अर्काय नमः ॥
भास्कराय नमः ॥ १२ ॥ नमः सवित्रे जग-
देकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ॥
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिञ्चिना-
रायणशंकरात्मने ॥ १ ॥ नमोऽस्तु सूर्याय
सहस्ररश्मये सहस्रशाखान्वितसंभवात्मने ॥
सहस्रयोगोद्भवभावभागिने सहस्रसंख्यायु-
गधारिणे नमः ॥ २ ॥ आदित्यस्य नमस्का-
रं ये कुर्वन्ति दिने दिने ॥ जन्मान्तरसहस्रेषु
दारिद्र्यं नोपजायते ॥ ३ ॥ इति नमस्काराः ॥

यह ध्यान है । सूर्यमंडलके मध्यमें विराजमान कम-
लासनपर बैठे हुए बिजावठ, मकराकार कुडल और

मुकुट धारण किये हुए हारवाले सुवर्णके समान शोभित शरीरवाले शंख और चक्र धारण करनेवाले नारायणका सदा ध्यान करे ॥ १ ॥ जिनके सुवर्णसे भूषित दिव्यरथके एकही पहिया है वे कमल हाथमें रखनेवाले दिवाकर भगवान् सूर्य मेरेपर प्रसन्न हों ॥ २ ॥ मित्रको नमस्कार १ रविको नमस्कार २ सूर्यको नमस्कार ३ भानुको नमस्कार ४ खग अर्थात् आकाशचारीको नमस्कार ५ पूषाको नमस्कार ६ हिरण्यगर्भको नमस्कार ७ मरीचिको नमस्कार ८ आदित्यको नमस्कार ९ सविताको नमस्कार १० अर्कको नमस्कार ११ भास्करको नमस्कार १२ संसारभरके एकही नेत्र जगत्की उत्पत्ति पालन और नाशके कारण वेदत्रयीस्वरूप सत्व रज और तमोगुणके स्वरूपको धारण करनेवाले और ब्रह्मा विष्णु शिवस्वरूप सवितादेव सूर्यको प्रणाम है ॥ १ ॥ सहस्र किरणवाले सहस्र शाखान्वित वेदक उत्पत्तिस्थान हजारों योगोंसे उत्पन्न जो भक्ति उसके भागी और हजारों युगोंको धारण करनेवाले सूर्यको प्रणाम हो ॥ २ ॥ जो मनु-

ष्य प्रतिदिन सूर्यको प्रणाम करते हैं उनके हजार जन्मों-
मेंभी दरिद्रता नहीं आती ॥ ३ ॥

शतानीक उवाच ॥ कथमादित्यमुद्यन्तमुप-
तिष्ठेद्द्विजोत्तम ॥ एतन्मे ब्रूहि विप्रेन्द्र प्रपद्ये
शरणं तव ॥ १ ॥

शतानीक कहते हैं कि हे द्विजोत्तम! उगते हुए सूर्यका
उपस्थान कैसे करना ? हे विप्रेंद्र ! आप मेरेसे कहो मैं
आपके शरणागत होता हूं ॥ १ ॥

सुमन्तुरुवाच ॥ इदमेव पुरा पृष्टः
शङ्खचक्रगदाधरः ॥ प्रणम्य शिरसा देव-
मर्जुनेन महात्मनः ॥ २ ॥ कुरुक्षेत्रे
महाराज निवृत्ते भारते रणे ॥ कृष्णनाथं
समासाद्य प्रार्थयित्वाऽब्रवीदिदम् ॥ ३ ॥

सुमंतु कहते हैं कि यही बात पहले समयमें अर्जुनने
देव श्रीकृष्णको शिरसे प्रणाम करके शंखचक्रगदाधारी
महात्मा कृष्णसे पूछा था ॥ २ ॥ हे महाराज !
कुरुक्षेत्रमें भारतका संग्राम हो चुकनेपर कृष्णनाथसे
प्रार्थनापूर्वक अर्जुन कहने लगा ॥ ३ ॥

अर्जुन उवाच ॥ ज्ञानं च धर्मशा-
स्त्राणां गुह्याद्गुह्यतरं तथा ॥ मया कृष्ण
परिज्ञातं वाङ्मयं सचराचरम् ॥ ४ ॥
सूर्यस्तुतिमयं न्यासं वक्तुमर्हसि माधव ॥
भक्त्या पृच्छामि देवेश कथयस्व प्रसा-
दतः ॥ ५ ॥ सूर्यभक्तिं करिष्यामि
कथं सूर्यं प्रपूजयेत् ॥ तदहं श्रोतु-
मिच्छामि त्वत्प्रसादेन यादव ॥ ६ ॥

अर्जुन कहता है हे कृष्ण ! गुप्तसे गुप्त धर्मशास्त्रोंका ज्ञान स्थावर और जंगमसहित सब वाणीका विषय जान लिया ॥ ४ ॥ हे यादव ! अब आप सूर्यस्तुतिरूप न्यासको कहिये । हे देवेश ! मैं भक्तिपूर्वक पूछता हूं सो आप प्रसन्न होकर कहिये ॥ ५ ॥ सूर्यकी भक्ति करूंगा सो हे यादव ! आपकी कृपासे मैं यह सुनना चाहता हूं कि सूर्यकी पूजा कैसे करना ॥ ६ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ रुद्रादिदैवतैः सर्वैः पृष्टेन
कथितं मया ॥ वक्ष्येऽहं सूर्यविन्यासं शृणु
पाण्डव यत्नतः ॥ ७ ॥ अस्माकं यत्त्वया

पृष्टमेकाचित्तो भवार्जुन ॥ तदहं संप्रवक्ष्या-
मि आदिमध्यावसानकम् ॥ ८ ॥

श्रीभगवान् कहते हैं हे पांडव ! जो मैंने रुद्रादि देवताओंके पूछनेपर कहा था उस सूर्यके न्यासको कहता हूं तू ध्यानसे सुन ॥ ७ ॥ जो तैंने हमसे पूछा सो आदि मध्य और अन्तसहित मैं कहूंगा । हे अर्जुन ! तू एकाग्रचित्त हो ॥ ८ ॥

अर्जुन उवाच ॥ नारायण सुरश्रेष्ठ पृच्छामि
त्वां महायशाः ॥ कथमादित्यमुद्यन्तमुप-
तिष्ठेत्सनातनम् ॥ ९ ॥

अर्जुन कहता है कि हे सुरश्रेष्ठ ! हे नारायण ! हे महायश ! मैं आपसे पूछता हूं कि उगते हुए सनातन सूर्यका उपस्थान कैसे करना ॥ ९ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ साधु पार्थ महाबाहो
बुद्धिमानसि पाण्डव ॥ यन्मां पृच्छ-
स्युपस्थानं तत्पवित्रं विभावसोः ॥ १० ॥
सर्वमाङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ॥
सर्वरोगप्रशमनमायुर्वर्द्धनमुत्तमम् ॥ ११ ॥

अमित्रदमनं पार्थ संग्रामे जयवर्द्धनम् ॥
वर्द्धनं धनपुत्राणामादित्यहृदयं शृणु ॥१२॥
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र सं-
शयः ॥ त्रिषु लोकेषु विख्यातं निःश्रे-
यसकरं परम् ॥ १३ ॥ देवदेवं नम-
स्कृत्य प्रातरुत्थाय चार्जुन ॥ विघ्नान्यने-
करूपाणि नश्यन्ति स्मरणादपि ॥ १४ ॥
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सूर्यमावाहयेत्सदा ॥
आदित्यहृदयं नित्यं जाप्यं तच्छृणु पाण्डव
॥ १५ ॥ यज्जपान्मुच्यते जन्तुर्दारिद्र्याद्‌दाशु
दुस्तरात् ॥ लभते च महासिद्धिं कुष्ठव्या-
धिविनाशिनीम् ॥ १६ ॥ अस्मिन्मन्त्रे
ऋषिश्छन्दो देवता शक्तिरेव च ॥ सर्वमेव
महाबाहो कथयामि तवाग्रतः ॥ १७ ॥
मया ते गोपितं न्यासं सर्वशास्त्रप्रबोधितम् ॥
अथ ते कथयिष्यामि उत्तमं मन्त्रमेव च ॥१८॥

श्रीभगवान् कहते हैं हे महाबाहो पांडव अर्जुन !
शाबास तू बुद्धिमान् है कि मेरेसे सूर्यके पवित्र उपस्था-

नका विधान पूछता है ॥ १० ॥ सूर्यका उपस्थान सब मंगलोंमें मांगल्य सब पापोंको दूर करनेवाला सब रोगोंका शमन करनेवाला और उत्तम आयु बढानेवाला है ॥ ११ ॥ हे पार्थ ! शत्रुओंका दमन करनेवाला संग्राममें विजय देनेवाला धन और पुत्रोंका बढानेवाला आदित्यहृदय सुन ॥ १२ ॥ जिसके सुननेसे निस्संदेह सब पापोंसे छूट जाता है और वह तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध और अत्यन्त कल्याणकारी है ॥ १३ ॥ हे अर्जुन ! सबेरे उठकर देवदेवको प्रणाम करनेसे और स्मरण करनेसे अनेक प्रकारके विघ्न दूर होते हैं ॥ १४ ॥ इसलिये सब यत्नसे सदा सूर्यका आवाहन करे और हे पांडव ! नित्य आदित्यहृदयका जप करना चाहिये उसको सुन ॥ १५ ॥ जिसके जप करनेसे मनुष्य दुस्तर दरिद्रतासे मुक्त हो जाता है और कुष्ठरोगकी दूर करनेवाली बडी सिद्धिको पहुँचता है ॥ १६ ॥ हे महाबाहो ! इस मंत्रमें ऋषि, छन्द, देवता और शक्ति जो जो है सो सब तेरे आगे कहता हूं ॥ १७ ॥ सब शास्त्रोंमें गुप्त जो न्यास है वह मैं तेरेसे कहता हूं और उत्तम मंत्रभी तेरे प्रति कहूंगा ॥ १८ ॥

ॐ अस्य श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य ॥ श्रीकृष्ण ऋषिः ॥ श्रीसूर्यात्मा त्रिभुवनेश्वरो देवता ॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥ हरितहयरथं दिवाकरं घृणिरिति बीजं ॥ ॐ नमो भगवते जितवैश्वानरजातवेदसे इति शक्तिः ॥ ॐ नमो भगवते आदित्याय नमः इति कीलकं ॥ ॐ अग्निगर्भदेवता इत्यस्त्रम् ॥ ॐ नमो भभगवते तुभ्यमादित्याय नमो नमः ॥ इति मन्त्रः॥

इस आदित्यहृदयस्तोत्ररूप मंत्रका श्रीकृष्ण ऋषि है। श्रीसूर्यरूपी तीन लोकके स्वामी देवता है। अनुष्टुप् छन्द है। 'हरितहयरथं दिवाकरं घृणिः' यह बीज है। 'ॐ नमो भगवते जितवैश्वानरजातवेदसे' यह शक्ति है। 'ॐ नमो भगवते आदित्याय नमः' यह कीलक है। 'ॐ अग्निगर्भ देवता यह अस्त्र है। 'ॐ नमो भगवते तुभ्यमादित्याय नमो नमः यह मंत्र है ॥

श्रीसूर्यनारायणप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रूं मध्यमा-

भ्यां नमः ॥ ॐ हैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ हौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ हां हृदयाय नमः ॥ ॐ हीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ हूं शिखायै वषट् ॥ ॐ हैं कवचाय हुम् ॥ ॐ हौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ हः अस्त्राय फट् ॥ ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः ॥ इति दिग्बन्धः ॥

श्रीसूर्यनारायणकी प्रसन्नतानिमित्त जपका विनियोग है। आगे न्यास है । ॐ हां अंगुष्ठाभ्यां नमः ( अंगूठोंसे ) ॐ हीं तर्जनीभ्यां नमः ( तर्जनीअंगुलियोंसे ) ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः ( बीचली अंगुलियोंसे ) ॐ हैं अनामिकाभ्यां नमः ( अनामिका अंगुलियोंसे ) ॐ हौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ( छोटी अंगुलियोंसे ) ॐ हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ( हथेली और उलटे हाथोंसे ) ॐ हां हृदयाय नमः ( हृदयके ) ॐ हीं शिरसे स्वाहा ( मस्तकके ) ॐ हूं शिखायै वषट् ( शिखाके ) ॐ हैं कवचाय हुं ( दोनों कब्जोंके ) ॐ हौं नेत्रत्रयाय वौषट्

( नेत्र और ललाटको तीन अंगुलि लगाकर ) ॐ हः अस्त्राय फट् ( हथेलियोंको दो बेर मिलाकर ) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ऐसे दिग्बंध करना ॥

अथ ध्यानम् ॥ भास्वद्रत्नाढ्यमौलिः स्फुरदधररुचा रञ्जितश्चारुकेशो भास्वान्यो दिव्यतेजाः करकमलयुतः स्वर्णवर्णः प्रभाभिः ॥ विश्वाकाशावकाशग्रहपतिशिखरे भाति यश्चोदयाद्रौ सर्वानन्दप्रदाता हरिहरनमितः पातु मां विश्वचक्षुः ॥ १ ॥ पूर्वमष्टदलं पद्मं प्रणवादिप्रतिष्ठितम् ॥ मायाबीजं दलाष्टाग्रे यन्त्रमुद्धारयेदिति ॥ २ ॥ आदित्यं भास्करं भानुं रविं सूर्यं दिवाकरम् ॥ मार्तण्डं तपनं चेति दलेष्वष्टसु योजयेत् ॥ ३ ॥ दीप्ता सूक्ष्मा जया भद्रा विभूतिर्विमला तथा ॥ अमोघा विद्युता चेति मध्ये श्रीः सर्वतोमुखी ॥ ४ ॥ सर्वज्ञं सर्वगं चैव सर्वकारणदेवताम् ॥ सर्वेशं सर्वहृदयं नमामि

सर्वसाक्षिणम् ॥ ५ ॥ सर्वात्मा सर्व-
कर्त्ता च सृष्टिजीवनपालकः ॥ हितः स्वर्गा-
पवर्गश्च भास्करेश नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥
इति प्रार्थना ॥

अब यह ध्यान है। दमकते हुए रत्नोंसे जडे हुए मुकुटवाले शोभित होठके रंगसे रंगे हुए सुंदर केशवाले प्रकाशवाले दिव्यतेजवाले हाथमें कमल लिये हुए कांतिमें सुवर्णके समान और जो संपूर्ण आकाशके अवकाशको ग्रहण किये हुए और उदयाचलके शिखरपर शोभित सबको आनंददायी ब्रह्मा विष्णु शिव जिन्हें प्रणाम करे ऐसे संसारके नेत्ररूप सूर्य मेरी रक्षा करो ॥ १ ॥ पहले आठ पत्तोंको कमल लिखे और प्रणव ओंकार आदिमें जिसके ऐसा मायाबीज ह्रीं पत्तोंके अग्रभागमें लिखे ऐसा यंत्र बनावे ॥ २ ॥ और आठों पत्तोंपर आदित्य, भास्कर, भानु, रवि, सूर्य, दिवाकर, मार्तण्ड, तपन इन आठों नामोंको लिखे ॥ ३ ॥ और दीप्ता, सूक्ष्मा, जया, भद्रा, विभूति, विमला, अमोघा और विद्युता ये नाम लिखे तथा कमलके बीचमें श्री सर्वतोमुखी लिखे ॥ ४ ॥ सर्वज्ञ सर्व-

व्यापी सबके कारण देवता सबके स्वामी सबके हृदय अर्थात् अन्तर्यामी और सर्वसाक्षीको प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥ हे भास्कर ईश ! आप सबके आत्मा सर्वकर्त्ता ऋषिके जीवन और पालन करनेवाले स्वर्ग और मोक्षके कारण है आपको नमस्कार है ॥ ६ ॥

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो सर्वा-
त्मने सप्तहयाय भानवे ॥ अनन्तशक्ति-
र्मणिभूषणेन ददस्व भुक्तिं मम मुक्तिम-
व्ययाम् ॥ ७ ॥ अर्कं तु मूर्ध्नि विन्यस्य
ललाटे तु रविं न्यसेत् ॥ विन्यसेन्नेत्रयोः
सूर्यं कर्णयोश्च दिवाकरम् ॥ ८ ॥ नासि-
कायां न्यसेद्भानुं मुखे वै भास्करं न्यसे-
त् ॥ पर्जन्यमोष्ठयोश्चैव तीक्ष्णं जिह्वा-
न्तरे न्यसेत् ॥ ९ ॥ सुवर्णरेतसं कण्ठे
स्कन्धयोस्तिग्मतेजसम् ॥ बाह्वोस्तु पूष-
णं चैव मित्रं वै पृष्ठतो न्यसेत् ॥ १० ॥
वरुणं दक्षिणे हस्ते त्वष्टारं वामतः करे ॥
हस्तावुष्णकरः पातु हृदयं पातु भानु-

मान् ॥ ११ ॥ उदरे तु यम विन्द्यादादित्यं नाभिमण्डले ॥ कट्यां तु विन्यसेद्धंसं रुद्रमूर्वोस्तु विन्यसेत् ॥ १२ ॥ जान्वोस्तु गोपतिं न्यस्य सवितारं तु जङ्घयोः ॥ पादयोश्च विवस्वन्तं गुल्फयोश्च दिवाकरम् ॥ १३ ॥ बाह्यतस्तु तमोध्वंसं भगमभ्यन्तरे न्यसेत् ॥ सर्वाङ्गेषु सहस्रांशुं दिग्विदिक्षु भगं न्यसेत् ॥ १४ ॥ इति दिग्बन्धः ॥

हे विभावसु सूर्य ! सबके आत्मा सात घोडोंवाले भानु अनन्तशक्तिवाले और मणियुक्त भूषणोंसे शोभित आपको प्रणाम है आप मेरेको भोग और नाशरहित मोक्ष सदा दो ॥ ७ ॥ अर्क नाम सूर्यको मस्तकपर न्यास करे ललाटपर रविको दोनों नेत्रोंपर सूर्यको दोनों कानोंमें दिवाकरको न्यास करे ॥ ८ ॥ नासिकामें भानुको न्यास करे मुखमें भास्करको न्यास करे दोनों होठोंमें पर्जन्यको जिह्वाके बीचमें तीक्ष्णको न्यास करे ॥ ९ ॥ सुवर्णरेताको कण्ठमें तिग्मतेजोंको कंधोंपर बाहोंपर पूषाको

और मित्रको पीठपर न्यास करे ॥ १० ॥ दहने हाथपर वरुण और बायें हाथमें मित्रको न्यास करे उष्णकर दोनों हाथोंके और हृदयकी भानुमान् रक्षा करो ॥ ११॥ उदरमें यमको नाभिमें आदित्यको माने कमरमें हंसको और दोनों जांघोंमें रुद्रको न्यास करे ॥ १२ ॥ घुटनोंमें गोपतिको न्यास करे सविताको पींडलियोंपर पांवोंपर विवस्वान् टकनोंपर दिवाकरका न्यास करे ॥ १३ ॥ बाहर तमोध्वंसको और भीतर भगनामकको सब अंगोंमें सहस्रांशु तथा दिशा और कोणोंमें भगनामकको न्यास करे ॥ १४ ॥

एष आदित्यविन्यासो देवानामपि दुर्लभः ॥ इमं भक्त्या न्यसेत्पार्थ स याति परमां गतिम् ॥ १५ ॥ कामक्रोधकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ सर्पादपि भयं नैव संग्रामेषु पथिष्वपि ॥ १६ ॥

यह आदित्यका न्यास देवताओंकोभी दुर्लभ है। हे पार्थ ! जो इसका भक्तिपूर्वक न्यास करे वह परम गतिको प्राप्त होगा ॥ १५ ॥ काम और क्रोधसे किये हुए

पापसे मुक्त होता है इसमें संदेह नहीं संग्राममें रास्तेमें और सर्पका उसको कुछ भय नहीं है ॥ १६ ॥

रिपुसंघट्टकालेषु तथा चोरसमागमे ॥
त्रिसंध्यं जपतो न्यासं महापातकनाशनम् ॥ १७ ॥ विस्फोटकात्समुत्पन्नं तीव्रज्वरसमुद्भवम् ॥ शिरोरोगं नेत्ररोगं सर्वव्याधिविनाशनम् ॥ १८ ॥

शत्रुसे भिडनेमें और चोर मिलनेपर भय नहीं प्रातःकाल मध्याह्न और सायंकालमें जप करे और न्यास करनेसे महापापोंका नाश होता है ॥ १७ ॥ शीतला तीव्रज्वरसे उत्पन्न कष्ट और शिरका रोग नेत्ररोग और सब व्याधियोंका नाश हो ॥ १८ ॥

कुष्ठव्याधिस्तथा दद्रुरोगाश्च विविधाश्च ये ॥ जप्यमाने विनश्यन्ति शृणु भक्त्या तदर्जुन ॥ १९ ॥ आदित्यो मन्त्रसंयुक्त आदित्यो भुवनेश्वरः ॥ आदित्यान्नापरो देवो ह्यादित्यः परमेश्वरः ॥ २० ॥

कोढ दाद और बहुतसे रोग इसके जप करनेसे नष्ट

होते हैं। हे अर्जुन ! तू इसे भक्तिपूर्वक सुन ॥ १९ ॥ सूर्य मंत्रोंसे प्रतिपादनीय है और आदित्य भगवान् लोकोंके स्वामी हैं सूर्यसे बढकर और देवता नहीं और आदित्य परमेश्वर हैं ॥ २० ॥

आदित्यमार्चयद्ब्रह्मा शिव आदित्यमार्चयत् ॥ यदादित्यमयं तेजो मम तेजस्तदर्जुन ॥ २१ ॥ आदित्यं मन्त्रसंयुक्तमादित्यं भुवनेश्वरम् ॥ आदित्यं ये प्रपश्यन्ति मां पश्यन्ति न संशयः ॥ २२ ॥

हे अर्जुन ! ब्रह्माने आदित्यका पूजन किया और शिवजीने आदित्यका पूजन किया और जो आदित्यका तेज है सो मेराही तेज है ॥ २१ ॥ मंत्रोंसे प्रतिपादनीय और लोकोंके स्वामी आदित्यसूर्यको जो मनुष्य देखते हैं वे मानो मेरेहीको देखते हैं इसमें संदेह नहीं ॥ २२ ॥

त्रिसंध्यमर्चयेत्सूर्यं स्मरेद्भक्त्या तु यो नरः ॥ न स पश्यति दारिद्र्यं जन्मजन्मनि चार्जुन ॥ २३ ॥ एतत्ते कथितं पार्थ आदित्यहृदयं मया ॥ शृण्व-

न्मुक्त्वा च पापेभ्यः सूर्यलोके महीयते ॥ २४॥

हे अर्जुन ! जो मनुष्य भक्तिपूर्वक सूर्यका स्मरण और प्रात, मध्याह्न और सायंकालमें पूजन करे वह किसी जन्ममें दरिद्रता नहीं देखे ॥ २३ ॥ हे पार्थ ! यह मैंने तेरेसे आदित्यहृदय कहा इसे भक्तिपूर्वक सुननेसे सब पापोंसे छूटकर सूर्यलोकमें पूजित होता है ॥ २४ ॥

ॐ नमो भगवते तुभ्यमादित्याय नमो नमः ॥ आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् ॥ २५ ॥ सुवर्णः स्फटिको भानुः स्फुरितो विश्वतापनः ॥ रविर्विश्वो महातेजाः सुवर्णः सुप्रबोधकः ॥२६॥

भगवान् आदित्य आपको प्रणाम है आदित्य सविता सूर्य आकाशचारी पूषा किरणोंवाले ॥ २५ ॥ सुवर्ण समान स्फटिकके तुल्य भानु प्रकाशमान संसारको तपानेवाले रवि विश्वरूपी बडे तेजवाले उत्तमवर्णवाले संसारको जगानेवाले ॥ २६ ॥

हिरण्यगर्भस्त्रिशिरास्तपनो भास्करो रविः ॥
मार्तण्डो गोपतिः श्रीमान्कृतज्ञश्च प्रताप-

वान् ॥ २७ ॥ तमिस्रहा भगो हंसो नास-
त्यश्च तमोनुदः ॥ शुद्धो विरोचनः केशी
सहस्रांशुर्महाप्रभुः ॥ २८ ॥

हिरण्यगर्भ तीन शिरधारी तपानेवाले भास्कर रवि मार्तण्ड किरणवाले श्रीमान् कृतज्ञ प्रतापवाले ॥ २७ ॥ अंधकार मिटानेवाले भगनामा हंसरूपी नासत्य अंधेरेको भगानेवाले शुद्ध विरोचन केशी हजार किरणवाले महाप्रभु ॥ २८ ॥

विवस्वान्पूषणो मृत्युर्मिहिरो जामदग्न्यजित् ॥
घर्मरश्मिः पतङ्गश्च शरण्यो मित्रहा तपः
॥ २९ ॥ दुर्विज्ञेयगतिः शूरस्तेजोराशिर्महा-
यशाः ॥ शंभुश्चित्राङ्गदः सौम्यो हव्यकव्यप्र-
दायकः ॥ ३० ॥

विवस्वान् पूषण मृत्युरूप मिहिर परशुरामको जीत-नेवाले रामचंद्रसमान गरम किरणवाले पतंग शरणागतोंपर कृपा करनेवाले शत्रुनाशक तपःस्वरूप ॥ २९ ॥ जिनकी गति जानी नहीं जाय शूर तेजके समूह बडे यश-वाले शंभुरूप चित्र नानाप्रकारके अंगद बिजावठवाले

सौम्य हव्य देवान्न और कव्य पितरोंका अन्न उसे देनेवाले ॥ ३० ॥

अंशुमानुत्तमो देव ऋग्यजुःसाम एव च ॥
हरिदश्वस्तमोदारः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्
॥३१॥ अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंभुस्तिमिरनाशनः ॥ पूषा विश्वंभरो मित्रः सुवर्णः
सुप्रतापवान् ॥ ३२ ॥

किरणवाले उत्तम देव ऋक् यजु और सामवेदरूप हरे घोडोंवाले अंधकारको चीरनेवाले सात घोडोंवाले किरणवाले ॥ ३१ ॥ अग्निको गर्भमें रखनेवाले अदितिके पुत्र शंभुरूप अंधकारनाशक पूषा विश्वंभर मित्र सुवर्ण अच्छे प्रतापवाले ॥ ३२ ॥

आतपी मण्डली भास्वांस्तपनः सर्वतापनः ॥
कृतविश्वो महातेजाः सर्वरत्नमयोद्भवः॥३३॥
अक्षरश्च क्षरश्चैव प्रभाकरविभाकरौ ॥ चन्द्रश्चन्द्राङ्गदः सौम्यो हव्यकव्यप्रदायकः ॥३४॥

आतपवाले मंडलवाले भास्वान् तपन सबको तपानेवाले विश्वको करनेवाले बडे तेजवाले सब रत्नप्रचुर वस्तु-

ओंके उत्पत्तिस्थान ॥ ३३ ॥ अक्षर क्षर प्रभाकर विभा-
कर चंद्र चंद्रांगद सौम्य हव्यकव्यप्रदायक ॥ ३४ ॥

अङ्गारकोऽङ्गदोऽगस्ती रक्ताङ्गश्चाङ्गवर्द्धनः ॥
बुद्धो बुद्धासनो बुद्धिर्बुद्धात्मा बुद्धिवर्द्ध-
नः ॥ ३५ ॥ बृहद्भानुर्बृहद्भासो बृहद्धात्मा
बृहस्पतिः ॥ शुक्रस्त्वं शुक्ररेतास्त्वं शुक्राङ्गः
शुक्रभूषणः ॥ ३६ ॥

अंगारक अंगद अगस्ती रक्त अंगवाले अंगवर्धन बुद्ध
बुद्धासन बुद्धिरूप बुद्धात्मा बुद्धि बढानेवाले ॥ ३५ ॥
बडी किरणवाले बडी कांतिवाले बडे तेजवाले बृहस्पति-
रूप आप शुक्र हो आप शुक्ररेता हो शुक्र अंगवाले शुक्र-
भूषणवाले हो ॥ ३६ ॥

शनिमान् शनिरूपस्त्वं शनैर्गच्छसि सर्व-
दा ॥ अनादिरादिरादित्यस्तेजोराशिर्महात-
पाः ॥ ३७ ॥ अनादिरादिरूपस्त्वमादित्यो
दिक्पतेर्यमः ॥ भानुमान्भानुरूपस्त्वं स्वर्भा
नुर्भानुर्दीप्तिमान् ॥ ३८ ॥

शनिवाले शनिरूप हो सदा धीरे चलते हो अनादि

आदि आदित्य तेजके समूह बडे तपवाले ॥ ३७ ॥ अनादि आदिरूप हो आदित्य दिशाओंके स्वामी यम अर्थात् सबके नियंता भानुमान् भानुरूप हो स्वर्भानु भानु दीप्ति-मान् हो ॥ ३८ ॥

धूमकेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुरनुत्तमः ॥
तिमिरावरणः शंभुः स्रष्टा मार्तण्ड एव च ॥ ३९ ॥
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमाय नमो नमः ॥
नमोत्तराय गिरये दक्षिणाय नमो नमः ॥ ४० ॥

धूमकेतु महाकेतु सर्वकेतु जिससे अधिक उत्तम नहीं ऐसे अंधकारको समेटनेवाले शंभु रचनेवाले मार्तण्ड ॥ ३९ ॥ पूर्वपर्वतको नमस्कार पश्चिमपर्वतको नमस्कार उत्तरपर्वतको प्रणाम और दक्षिणपर्वतको नमस्कार ॥ ४० ॥

नमो नमः सहस्रांशो ह्यादित्याय नमोः नमः ॥
नमः पद्मप्रबोधाय नमस्ते द्वादशात्मने
॥ ४१ ॥ नमो विश्वप्रबोधाय नमो भ्राजि-
ष्णुजिष्णवे ॥ ज्योतिषे च नमस्तुभ्यं ज्ञाना-
कार्य नमो नमः ॥ ४२ ॥

हे हजार किरणवाले ! आपको प्रणाम है आदित्यको

प्रणाम है कमलोंको खिलानेवालेको प्रणाम और द्वादश स्वरूपवालेको प्रणाम है ॥ ४१ ॥ संसारको जगानेवाले प्रकाशमान और जयशालीको प्रणाम है तेजःस्वरूपको और ज्ञानरूप सूर्यको प्रणाम है ॥ ४२ ॥

प्रदीप्ताय प्रगल्भाय युगान्ताय नमो नमः ॥
नमस्ते होतृपतये पृथिवीपतये नमः ॥ ४३ ॥
नमोङ्कारवषट्कार सर्वयज्ञ नमोऽस्तु ते ॥
ऋग्वेदादियजुर्वेदसामवेद नमोस्तु ते ॥ ४४ ॥

प्रदीप्त प्रगल्भ युगका अंत करनेवालेको प्रणाम होताओंके स्वामीको प्रणाम पृथ्वीके पतिको प्रणाम है ॥ ४३ ॥ हे ओंकार वषट्काररूप सर्वयज्ञरूप ! आपको प्रणाम है ऋग्वेदयजुर्वेद और सामवेदरूप आपको प्रणाम है ॥ ४४ ॥

नमो हाटकवर्णाय भास्कराय नमो नमः ॥
जयाय जयभद्राय हरिदश्वाय ते नमः ॥ ४५ ॥
दिव्याय दिव्यरूपाय ग्रहाणां पतये नमः ॥
नमस्ते शुचये नित्यं नमः कुरुकुलात्मने ॥ ४६ ॥

सुवर्णके समान वर्णवाले भास्करको प्रणाम जय जय भद्र और हरे घोडोंवाले आपको प्रणाम है ॥ ४५ ॥ दिव्य

और दिव्यरूपवाले ग्रहोंके स्वामीको प्रणाम नित्य शुद्धको प्रणाम कुरुकुलके उपास्य आपको प्रणाम ॥ ४६ ॥

नमस्त्रैलोक्यनाथाय भूतानां पतये नमः ॥
नमः कैवल्यनाथाय नमस्ते दिव्यचक्षुषे ॥ ४७ ॥ त्वं ज्योतिस्त्वं द्युतिर्ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं प्रजापतिः ॥ त्वमेव रुद्रो रुद्रात्मा वायुरग्निस्त्वमेव च ॥ ४८ ॥

तीनों लोकोंके स्वामीको प्रणाम सब प्राणियोंके स्वामीको प्रणाम कैवल्यमोक्षके स्वामीको प्रणाम दिव्य-नेत्र रूपको प्रणाम है ॥ ४७ ॥ आप तेज हो आप कांति हो आप ब्रह्मा हो आप विष्णु हो आप प्रजापति हो आपही रुद्रस्वरूप और रुद्र हो आपही वायु और अग्नि हो ॥ ४८ ॥

योजनानां सहस्रे द्वे द्वे शते द्वे च योजने ॥
एकेन निमिषार्द्धेन क्रममाण नमोस्तु ते ॥ ४९ ॥ नव योजनलक्षाणि सहस्रद्विश-तानि च ॥ यावद्घटीप्रमाणेन क्रममाण नमो स्तु ते ॥ ५० ॥

दो हजार दो सौ दो योजनको एक आधे पलमें पार करनेवाले आपको प्रणाम हो ॥ ४९ ॥ एक घडीसे कममें नौ लाख एक हजार दो सौ योजन पार करनेवाले आपको प्रणाम हो ॥ ५० ॥

अग्रतश्च नमस्तुभ्यं पृष्ठतश्च सदा नमः ॥
पार्श्वतश्च नमस्तुभ्यं नमस्ते चास्तु सर्वदा
॥ ५१ ॥ नमः सुरारिहन्त्रे च सोमसूर्या-
ग्निचक्षुषे ॥ नमो दिव्याय व्योमाय सर्वत-
न्त्रमयाय च ॥ ५२ ॥

आपको आगेसे प्रणाम है पीछेसे प्रणाम है पार्श्वकी ओरसे प्रणाम है और सब ओरसे प्रणाम है ॥ ५१ ॥ देवशत्रुओंको मारनेवालेको प्रणाम चन्द्र सूर्य और अग्नि-रूप नेत्रवाले दिव्यस्वरूप आकाशके समान निर्लेप और सब तन्त्रोंसे प्रतिपादनीय आपको प्रणाम है ॥ ५२ ॥

नमो वेदान्तवेद्याय सर्वकर्मादिसाक्षिणे ॥
नमो हरितवर्णाय सुवर्णाय नमो नमः ॥ ५३ ॥
अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा ॥
चैत्रमासे तु वेदाङ्गो भानुर्वैशाखतापनः ॥५४॥

वेदान्तसे जानने योग्य सब कर्मोंके मुख्य साक्षीको प्रणाम हरितवर्णवालेको प्रणाम और सुवर्णरूपको नमस्कार है ॥ ५३ ॥ माघमें अरुणनामा फाल्गुनमें सूर्य चैत्रमें वेदांग वैशाखमें भानु तपता है ॥ ५४ ॥

ज्येष्ठमासे तपेदिन्द्र आषाढे तपते रविः ॥
गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥ ५५ ॥ इषे सुवर्णरेताश्च कार्तिके च
दिवाकरः ॥ मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुः
सनातनः ॥ ५६ ॥

ज्येष्ठमें इंद्र तपता है आषाढमें रवि तपता है श्रावणमें गभस्ति और भाद्रपदमें यमनामा तपता है ॥ ५५ ॥ आश्विनमें सुवर्णरेता कार्तिकमें दिवाकर मार्गशिरमें मित्र और पौषमें सनातन विष्णुरूप तपता है ॥ ५६ ॥

पुरुषस्त्वधिके मासे मासाधिक्ये तु कल्पयेत् ॥ इत्येते द्वादशादित्याः काश्यपेयाः
प्रकीर्तिताः ॥ ५७ ॥ उग्ररूपा महात्मान-
स्तपंते विष्णुरूपिणः ॥ धर्मार्थकाममोक्षा-
णां प्रस्फुटा हेतवो नृप ॥ ५८ ॥

जिस सालमें अधिक मास हो उसके अधिकमासमें पुरुषोत्तमकी कल्पना करे ये बारह आदित्य कश्यपजीके पुत्र कहे हैं ॥ ५७ ॥ ये विष्णुरूपी उग्र रूपवाले महात्मा तपते हैं और हे राजन् ! धर्म अर्थ काम और मोक्षके स्पष्ट कारण हैं ॥ ५८ ॥

सर्वपापहरं चैवमादित्यं संप्रपूजयेत् ॥
एकधा दशधा चैव शतधा च सह-
स्रधा ॥ ५९ ॥ तपन्ते विश्वरूपेण
सृजन्ति संहरन्ति च ॥ एष विष्णुः शिवश्चैव
ब्रह्मा चैव प्रजापतिः ॥ ६० ॥

इस प्रकार सूर्यका पूजन एक मूर्तिमें दश मूर्तियोंमें और हजार मूर्तियोंमें करे इससे सब पाप दूर होते हैं ॥ ५९ ॥ येही आदित्य तपते हैं और विष्णुरूपसे सृष्टिकी रचना करते हैं और संहार करते हैं यही विष्णु यही ब्रह्मा यही शिवजी हैं ॥ ६० ॥

महेन्द्रश्चैव कालश्च यमो वरुण एव च ॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वतापनः ॥ ६१ ॥

वायुरग्निर्धनाध्यक्षो भूतकर्ता स्वयंप्रभुः ॥
एष देवो हि देवानां सर्वमाप्यायते जगत् ॥६२॥
इंद्र काल यम वरुण यही हैं और नक्षत्र ग्रह और तारोंके स्वामी और विश्वको तपानेवाले हैं ॥ ६१ ॥ वायु अग्नि कुबेर प्राणियोंके कर्ता स्वयंप्रभु यही हैं ये सब देवोंके देव हैं और सब जगत्को तृप्त करते हैं ॥ ६२ ॥

एष कर्ता हि भूतानां संहर्ता रक्षकस्तथा ॥
एष लोकानुलोकश्च सप्तद्वीपाश्च सागराः
॥ ६३ ॥ एष पातालसप्तस्था दैत्यदानवरा-
क्षसाः ॥ एष धाता विधाता च बीजं क्षेत्रं
प्रजापतिः ॥ ६४ ॥

यह संसारके रचनेवाले संहार करनेवाले और रक्षक हैं यही लोक हैं यही छोटे लोक हैं सातों द्वीप और समुद्र यही हैं ॥ ६३ ॥ यही पाताल रसातल तलातल आदि सातोंमें स्थित हैं दैत्य दानव और राक्षस सब यही हैं यही धाता विधाता बीज क्षेत्र और प्रजापति हैं ॥ ६४ ॥

एष एव प्रजा नित्यं संवर्धयति रश्मिभिः ॥
एष यज्ञः स्वधा स्वाहा ह्रीः श्रीश्च पुरुषो-

त्तमः ॥ ६५ ॥ एष भूतात्मको देवः सूक्ष्मो-
ऽव्यक्तः सनातनः ॥ ईश्वरः सर्वभूतानां पर-
मेष्ठी प्रजापतिः ॥ ६६ ॥

यही अपनी किरणोंसे प्रजाको नित्य बढाता है यही यज्ञ है यही स्वधा स्वाहा लज्जा लक्ष्मी और पुरुषोत्तम विष्णु है ॥ ६५ ॥ यही देवता सब प्राणिरूप सूक्ष्म अव्यक्त सनातन सबका ईश्वर परमेष्ठी प्रजापति है ॥६६॥

कालात्मा सर्वभूतात्मा वेदात्मा विश्वतो-
मुखः ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिसंसारभयना-
शनः ॥ ६७ ॥ दारिद्र्यव्यसनध्वंसी श्रीमा-
न्देवो दिवाकरः ॥ विकर्तनो विवस्वांश्च
मार्तण्डो भास्करो रविः ॥ ६८ ॥

कालरूपी सर्वप्राणिरूपी वेदस्वरूप सब तरफ मुखवाले जन्म मृत्यु बुढापा रोग संसारके भयको दूर करनेवाले हैं ॥६७॥ श्रीमान् दिवाकर देव दरिद्रताके व्यसनको मिटा-नेवाले हैं विकर्तन विवस्वान् मार्तण्डभास्कर रवि ॥ ६८ ॥

लोकप्रकाशकः श्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः ॥
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमि-

स्वहा ॥ ६९ ॥ तपनस्तापनश्चैव शुचिः
सप्ताश्ववाहनः ॥ गभस्तिहस्तो ब्रह्मण्यः
सर्वदेवनमस्कृतः ॥ ७० ॥

लोकको प्रकाश करनेवाले श्रीमान् लोकोंके नेत्ररूप ग्रहोंके स्वामी लोकोंके साक्षी तीनों लोकोंके स्वामी कर्ता हर्ता अंधेरेके नाशक हैं ॥ ६९ ॥ तपन तपानेवाले शुद्ध सात घोडोंके वाहनवाले किरणरूप हाथवाले ब्राह्मणोंपर कृपा रखनेवाले सब देवता जिन्हें नमस्कार करें ॥ ७० ॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं नरा नार्यश्च मन्दिरे ॥
यस्य प्रसादात्संतुष्टिरादित्यहृदयं जपेत्
॥ ७१ ॥ इत्येतैर्नामभिः पार्थ आदित्यं
स्तौति नित्यशः ॥ प्रातरुत्थाय कौन्तेय
तस्य रोगभयं न हि ॥ ७२ ॥

जिसकी कृपासे आयु आरोग्य ऐश्वर्य स्थानमें स्त्री पुरुष और संतोष हो उस आदित्यहृदयका जप करो ॥ ७१ ॥ हे कौन्तेय ! हे पार्थ ! जो सबेरे उठकर इन नामोंसे स्तुति करे उसके रोगका भय नहीं होगा ॥ ७२ ॥

पातकान्मुच्यते पार्थ व्याधिभ्यश्च न संश-

यः ॥ एकसंध्यं द्विसंध्यं वा सर्वपापैः प्रमु-
च्यते ॥ ७३ ॥ त्रिसंध्यं जपमानस्तु पश्येच्च
परमं पदम् ॥ यदह्नात्कुरुते पापं तदह्नात्प्र-
तिमुच्यते ॥ ७४ ॥

हे पार्थ ! पापोंसे और व्याधियोंसे मुक्त होता है इसमें संदेह नहीं और एक वार अथवा सवेरे सांझ पाठ करनेसे सब पापोंसे छूट जाता है ॥ ७३ ॥ तीनों काल जपनेसे परमपद प्राप्त हो दिनका किया हुआ पाप दिनमें पाठ करनेसे दूर होता है ॥ ७४ ॥

यद्रात्र्यात्कुरुते पापं तद्रात्र्यात्प्रतिमुच्यते ॥
दद्रुस्फोटककुष्ठानि मण्डलानि विषूचिका
॥ ७५ ॥ सर्वव्याधिमहारोगभूतबाधास्त
थैव च ॥ डाकिनी शाकिनी चैव महारोग-
भयं कुतः ॥ ७६ ॥

जो पाप रात्रिमें किया होय सो रातमें पाठ करनेसे छूट जाता है दाद शीतला कोढ चकत्त विषूचिका ॥ ७५ ॥ सब छोटे और बडे रोग तथा भूतबाधा रोग डाकिनी शाकिनी और महारोगका भय कहांसे हो ॥ ७६ ॥

ये चान्ये दुष्टरोगाश्च ज्वरातीसारकादयः ॥
जपमानस्य नश्यन्ति जीवेच्च शरदां शतम्
॥ ७७ ॥ संवत्सरेण मरणं यदा तस्य
ध्रुवं भवेत् ॥ अशीर्षां पश्यति च्छायाम-
होरात्रं धनंजय ॥ ७८ ॥

औरभी जो ज्वर अतिसार आदिक दुष्ट रोग हैं सो जप करनेसे दूर हो जाते हैं और सौ बरस जीता है॥७७॥ हे धनंजय ! जो मनुष्य रातदिन अपनी छायामें शिर नहीं देखे वह एक बरसमें निश्चयही मरणको प्राप्त होता है ७८॥

यस्त्विदं पठते भक्त्या भानोर्वारे महा-
त्मनः ॥ प्रातः स्नाने कृते पार्थ एकाग्रकृत-
मानसः ॥ ७९ ॥ सुवर्णचक्षुर्भवति न चान्ध-
स्तु प्रजायते ॥ पुत्रवान् धनसंपन्नो जायते
चारुजः सुखी ॥ ८० ॥

हे पार्थ अर्जुन ! जो मनुष्य इसे रविवारके दिन सवेरे स्नान करके एकाग्रचित्तसे पाठ करे ॥ ७९ ॥ उसके नेत्र उत्तम हो जाते हैं वह अंधा नहीं होता और पुत्रवान् धनवाला और निरोगी और सुखी रहता है ॥ ८० ॥

सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सूर्यनामविभूषितम्
॥ ८१ ॥ श्रुत्वा च निखिलं पार्थ सर्वपापैः
प्रमुच्यते ॥ अतः परतरं नास्ति सिद्धिका-
मस्य पाण्डव ॥ ८२ ॥

सूर्यके नामोंसे भूषित पवित्र आदित्यहृदयको सुननेसे हे पार्थ ! सब सिद्धियां मिलें सब जगह विजय हो ८१ ॥ सब पाप दूर हों । हे पांडव ! सिद्धिकी इच्छा करनेवालेके लिये इससे बढकर और नहीं है ॥ ८२ ॥

एतज्जपस्व कौन्तेय येन श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ॥
आदित्यहृदयं नित्यं यः पठेत्सुसमाहितः
॥ ८३ ॥ भ्रूणहा मुच्यते पापात्कृतघ्नो
ब्रह्मघातकः ॥ गोघ्नः सुरापो दुर्भोजी दुष्प्र-
तिग्रहकारकः ॥ ८४ ॥

हे कौंतेय ! इसका जप कर जिससे कल्याणको प्राप्त होगा जो मनुष्य सावधान मनसे आदित्यहृदयका नित्य पाठ करे ॥ ८३ ॥ उसकी भ्रूणहत्या कृतघ्नता ब्रह्महत्या

गोहत्या मदिरापानका दोष अशुद्ध भोजन करनेका दोष खोटा दान लेनेका पाप दूर होता है ॥ ८४॥

पातकानि च सर्वाणि दहत्येव न संशयः ॥
य इदं शृणुयान्नित्यं जपेद्वापि समाहितः
॥८५॥ सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोके मही-
यते ॥ अपुत्रो लभते पुत्रान्निर्धनो धनमा-
प्नुयात् ॥ ८६ ॥

इससे सब पाप निस्संदेह भस्म हो जाते हैं जो इस सावधान चित्तसे नित्य सुने अथवा जप करे ॥ ८५ ॥ वह सब पापोंसे शुद्ध होकर सूर्यलोकमें पूजित होता है जिसके पुत्र न हो उसके पुत्र हो निर्धनको धन मिले ॥ ८६ ॥

कुरोगी मुच्यते रोगाद्भक्त्या यः पठते सदा ॥
यस्त्वादित्यादिने पार्थ नाभिमात्रजले स्थितः
॥ ८७॥ उदयाचलमारूढं भास्करं प्रणतः
स्थितः ॥ जपते मानवो भक्त्या शृणुयाद्वा-
पि भक्तितः ॥ ८८ ॥

जो भक्तिपूर्वक सदा इसका पाठ करे वह रोगीभी हो तो उस दुष्ट रोगसे छूट जाय । हे पार्थ ! जो मनुष्य

रविवारको नाभितक जलमें खडा होकर ॥ ८७ ॥ उद-याचलपर चढते हुए सूर्यको प्रणाम करके खडा हुआ भक्तिपूर्वक इसका जप करे अथवा सुने ॥ ८८ ॥

स याति परमं स्थानं यत्र देवो दिवाकरः ॥
अमित्रदमनं पार्थ यदा कर्तुं समारभेत्
॥ ८९ ॥ तदा प्रतिकृतिं कृत्वा शत्रोश्च-
रणपांसुभिः ॥ आक्रम्य वामपादेन आदित्य-
हृदयं जपेत् ॥ एतन्मन्त्रं समाहूय सर्वसिद्धि-
करं परम् ॥ ९० ॥

वह जहां सूर्यदेव हैं उस परमस्थानको प्राप्त होता ह । हे पार्थ ! जब मनुष्यको शत्रुका दमन करना हो तब ॥८९॥ शत्रुकी मूर्ति बनाकर उसे बायें पैरके नीचे दबाकर आदि-त्यहृदयका जप करे शत्रुके प्राणोंको आवाहन करके इस मंत्रके जप करनेसे सब सिद्धियां प्राप्त हों ॥ ९० ॥

ॐ ह्रीं हिमालीढं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं निलीढं
स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मालीढं स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं हिमालीढं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं निलीढं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं मालीढं स्वाहा ॥ यह मंत्र है ॥

त्रिभिश्च रोगी भवति ज्वरी भवति पञ्चभिः ॥
जपैस्तु सप्तभिः पार्थ राक्षसा तनुमावि-
शेत् ॥ ९१ ॥ राक्षसेनाभिभूतस्य विका-
रान् शृणु पाण्डव ॥ गीयते नृत्यते नग्न
आस्फोटयति धावति ॥ ९२ ॥

इसके तीन जप करनेसे शत्रु रोगी हो जाय पांचसे ज्वर हो जाय सात जपोंसे हे पार्थ ! राक्षसका आवेश हो जाय ॥ ९१ ॥ हे पाण्डव ! राक्षसका आवेश होनेसे जो विकार होता है सो सुन वह गाता है नाचता है नंगा होकर खम्भ ठोकता है दौडता है ॥ ९२ ॥

शिवारुतं च कुरुते हसते क्रन्दते पुनः ॥
एवं संपीड्यते पार्थ यद्यपि स्यान्महेश्वरः
॥ ९३ ॥ किं पुनर्मानुषः कश्चिच्छौचाचार-
विवर्जितः ॥ पीडितस्य न संदेहो ज्वरो
भवति दारुणः ॥ ९४ ॥

गदिडके समान पुकारता है हँसता है चिल्लाता है इस प्रकार शिवजीभी हो तोभी कष्ट पाता है ॥ ९३ ॥ शौच और

आचाररहित मनुष्यकी तो बातही क्या है इस प्रकार कष्ट पाते हुएके निस्संदेह दारुण ज्वर होता है ॥ ९४ ॥

यदा चानुग्रहं तस्य कर्तुमिच्छेच्छुभंक-
रम् ॥ तदा सलिलमादाय जपेन्मन्त्र-
मिमं बुधः ॥ ९५ ॥ नमो भगवते तुभ्य-
मादित्याय नमो नमः ॥ जयाय जय-
भद्राय हरिदश्वाय ते नमः ॥ ९६ ॥

जब उस शत्रुको आराम करनेकी इच्छा हो तब हाथमें जल लेकर यह मंत्र बोलकर ॥ ९५ ॥ आप भगवान्को नमस्कार आदित्यको नमस्कार जय जयभद्र और हरे घोडोंवालेको प्रणाम है ॥ ९६ ॥

स्नापयेत्तेन मन्त्रेण शुभं भवति नान्यथा ॥
अन्यथा च भवेद्दोषो नश्यते नात्र संशयः
॥ ९७ ॥ अतस्ते निखिलः प्रोक्तः पूजां
चैव निशोध मे ॥ उपलिप्ते शुचौ देशे
नियतो वाग्यतः शुचिः ॥ ९८ ॥

उस जलसे उसे स्नान करावे उससे आराम हो ऐसा न करनेसे दोष नहीं मिटे और आराम नहीं हो ॥ ९७ ॥

यह सब तेरे प्रति मैंने कहा अब मेरेसे पूजाकी विधान सुन लीपे हुए शुद्ध स्थानमें नियमपूर्वक मौन लेकर शुद्ध होकर ॥ ९८ ॥

वृत्तं वा चतुरस्रं वा लिप्तभूमौ लिखे-
च्छुचिः ॥ त्रिधा तत्र लिखेत्पद्ममष्टपत्रं
सकर्णिकम् ॥ ९९ ॥ अष्टपत्रं लिखे-
त्पद्मं लिप्तगोमयमण्डले ॥ पूर्वपत्रे लिखे-
त्सूर्यमाग्नेय्यां तु रविं न्यसेत् ॥ १०० ॥

गोल अथवा चौकोनी चक्र तीन लकीर लगाकर लीपी हुई पृथ्वीपर लिखे और उसमें आठ पत्तोंवाला कमल कर्णिकासाहित लिखे ॥ ९९ ॥ पूर्वके पत्रमें सूर्य-शब्द अग्निकोणमें रविशब्द लिखे ॥ १०० ॥

याम्यायां च विवस्वन्तं नैर्ऋत्यां तु भगं
न्यसेत् ॥ प्रतीच्यां वरुणं विद्याद्वायव्यां
मित्रमेव च ॥ १०१ ॥ आदित्यमुत्तरे
पत्रे ईशान्यां विष्णुमेव च ॥ मध्ये तु भास्करं
विद्यात्क्रमेणैवं समर्चयेत् ॥ १०२ ॥

दक्षिणमें विवस्वान् लिखे नैर्ऋतमें भगनामको लिखे

पश्चिममें वरुण नाम लिखे वायव्य कोणमें मित्र नाम लिखे ॥ १०१ ॥ उत्तरकी तर्फके पत्तेपर आदित्य नाम लिखे ईशान कोणमें विष्णुको लिखे बीचमें भास्करको लिखे और क्रमसे इसी प्रकार पूजन करे ॥ १०२ ॥

अतः परतरं नास्ति सिद्धिकामस्य पाण्डव ॥
महातेजसमुद्यन्तं प्रणमेत्सकृताञ्जलिः
॥ १०३ ॥ सकेसराणि पद्मानि करवीराणि
चार्जुन ॥ तिलतण्डुलसंयुक्तं कुशगन्धोद-
केन च ॥ १०४ ॥

हे पांडव ! सिद्धिकी इच्छावालेके लिये इससे बढकर और नहीं है उगते हुए सूर्यको हाथ जोडकर प्रणाम करे ॥ १०३ ॥ हे अर्जुन ! केसरसहित कमलपुष्प करवीरके पुष्प तिल अक्षतासहित कुश और गंधजल ॥ १०४ ॥

रक्तचन्दनमिश्राणि कृत्वा वै ताम्रभाजने ॥
धृत्वा शिरसि तत्पात्रं जानुभ्यां धरणीं
स्पृशेत् ॥ १०५ ॥ मन्त्रपूतं गुडाकेश
चार्घ्यं दद्याद्गभस्तये ॥ सायुधं सरथं चैव
सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥ १०६ ॥

रक्तचंदनसहित सबोंको तांबेके पात्रमें रखकर उस पात्रको शिरपर रखकर घुटनोंसे पृथ्वीपर बैठे ॥ १०५ ॥ हे गुडाकेश ! मंत्र बोलकर सूर्यको वह अर्घ दे और मैं शस्त्ररथसहित सूर्यको आवाहन करता हूं ऐसा कहे ॥ १०६ ॥

स्वागतो भव ॥ सुप्रतिष्ठो भव ॥ सन्निधो
भव ॥ सन्निहितो भव ॥ संमुखो भव ॥
इति पञ्च मुद्राः ॥ स्फुटयित्वार्हयेत् सूर्यं
भुक्तिं मुक्तिं लभेन्नरः ॥ १०७ ॥

स्वागतो भव । सुप्रतिष्ठो भव । सन्निधो भव । सन्निहितो भव । सम्मुखो भव । ये पांच मुद्रा हैं इन पांचों मुद्राओंको दिखाकर सूर्यका पूजन करनेसे भुक्ति और मुक्ति प्राप्त होती है ॥ १०७ ॥

ॐ श्रीं विद्यां किलिकिलिकटकेष्टसर्वार्थसा-
धनाय स्वाहा॥ ॐ श्रीं ह्रीं हः हंसः सूर्याय
नमः स्वाहा ॥ ॐ श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः
सूर्यमूर्तये स्वाहा ॥ ॐ श्रीं ह्रीं खं खः
लोकाय सर्वमूर्तये स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं मार्त-

ण्डाय स्वाहा ॥ नमोऽस्तु सूर्याय सहस्र-
भानवे नमोऽस्तु वैश्वानरजातवेदसे ॥
त्वमेव चार्घ्यं प्रतिगृह्ण देव देवाधिदेवाय
नमो नमस्ते ॥ १०८ ॥

ॐ श्रीं विद्यां किलिकिलिकटकेष्टसर्वार्थसाधनाय स्वाहा । ॐ श्रीं ह्रीं ह्रः हंसः सूर्याय नमः स्वाहा ॥ ॐ श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः सूर्यमूर्तये स्वाहा ॥ ॐ श्रीं ह्रीं ख खः लोकाय सर्वमूर्तये स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं मार्तण्डाय स्वाहा ॥ हजार किरणवाले सूर्यको प्रणाम हो वैश्वानर और जातवेदाको प्रणाम । हे देव ! आप अर्घको ग्रहण करो देवोंकेभी देव आपको प्रणाम है ॥ १०८ ॥

नमो भगवते तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे ॥
दत्तमर्घ्यं मया भानो त्वं गृहाण नमोऽस्तु ते
॥ १०९ ॥ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे
जगत्पते ॥ अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घ्यं
नमोऽस्तु ते ॥ ११० ॥

भगवान् आपको नमस्कार जातवेदारूप आपको प्रणाम हो । हे भानो ! मेरा दिया हुवा अर्घ आप ग्रहण करो

आपको प्रणाम हो ॥ १०९ ॥ हे सूर्य ! हजार किरणवाले तेजके समूह संसारके स्वामी आइये और मेरेपर दया करके अर्घ ग्रहण करो आपको प्रणाम हो ॥ ११० ॥

नमो भगवते तुभ्यं नमस्ते जातवेदसे ॥
ममेदमर्घ्यं गृह्ण त्वं देवदेव नमोऽस्तु ते
॥ १११ ॥ सर्वदेवाधिदेवाय आधिव्याधि-
विनाशिने ॥ इदं गृहाण मे देव सर्वव्याधि-
र्विनश्यतु ॥ ११२ ॥

भगवान् जातवेदा आपको प्रणाम है । हे देवदेव ! मेरे अर्घको आप ग्रहण करो आपको प्रणाम हो ॥ १११ ॥ सब देवताओंके स्वामी आधि और व्याधिके नाशक हे देव ! आप इस अर्घको ग्रहण करो और सब रोग नष्ट हो ॥ ११२ ॥

नमः सूर्याय शान्ताय सर्वरोगविनाशिने ॥
ममेप्सितं फलं दत्त्वा प्रसीद परमेश्वर ॥११३॥

हे सब रोगनाशक ! शांत सूर्यको प्रणाम हे परमेश्वर ! मेरा वांछित फल देकर प्रसन्न हो ॥ ११३ ॥

ॐ नमो भगवते सूर्याय स्वाहा ॥ ॐ शि-
वाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वात्मने सूर्याय नमः
स्वाहा ॥ ॐ अक्षय्यतेजसे नमः स्वाहा ॥
सर्वसंकष्टदारिद्र्यं शत्रुं नाशय नाशय ॥
सर्वलोकेषु विश्वात्मन्सर्वात्मन्सर्वदर्शक: ११४

ॐ नमो भगवते सूर्याय स्वाहा। ॐ शिवाय स्वाहा। ॐ सर्वात्मने सूर्याय नमः स्वाहा। ॐ अक्षय्यतेजसे नमः स्वाहा। सब कष्ट दारिद्रता और शत्रुका नाश कीजिये। हे विश्वरूप! हे सर्वात्मन्! आप सब लोकोंमें सब कुछ देखनेवाले हो ॥ ११४ ॥

नमो भगवते सूर्य कुष्ठरोगान्विखण्डय ॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देव नमोऽस्तु ते
॥ ११५ ॥ नमो भगवते तुभ्यमादित्याय
नमो नमः ॥ ॐ अक्षय्यतेजसे नमः ॥ ॐ
सूर्याय नमः ॥ ॐ विश्वमूर्तये नमः ॥
आदित्यं च शिवं विन्द्याच्छिवमादित्यरू-
पिणम् ॥ उभयोरन्तरं नास्ति आदित्यस्य
शिवस्य च ॥ ११६ ॥

हे सूर्य ! आप भगवान्‌को प्रणाम है कुष्ठरोगोंको दूर कीजिये और हे देव ! आयु आरोग्य और ऐश्वर्यको दीजिये आपको प्रणाम है ॥ ११५ ॥ आप आदित्य भगवान्‌को प्रणाम है। ॐ अक्षय्यतेजसे नमः । ॐ सूर्याय नमः । ॐ विश्वमूर्तये नमः । सूर्यको शिवजी माने और शिवजीको आदित्यरूप माने सूर्य और शिवजीका अंतर कुछ नहीं है ॥ ११६ ॥

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं पुरुषो वै दिवाकरः ॥
उदये ब्रह्मणो रूपं मध्याह्ने तु महेश्वरः
॥ ११७ ॥ अस्तमाने स्वयं विष्णुस्त्रिमूर्तिश्च दिवाकरः ॥ नमो भगवते तुभ्यं
विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ११८ ॥

सूर्य पुरुष अर्थात् परमात्माही है उदयमें ब्रह्माका रूप है मध्याह्नको शिवरूप समझना ॥ ११७ ॥ अस्तके समय स्वयं विष्णु है इस प्रकार सूर्य त्रिमूर्ति है प्रभु विष्णु भगवान्‌रूप आपको प्रणाम है ॥ ११८ ॥

ममेदमर्घ्यं प्रतिगृह्ण देव देवाधिदेवाय नमो
नमस्ते ॥ ११९ ॥ श्रीसूर्याय साङ्गाय सप-
रिवाराय श्रीसूर्यनारायणायेदमर्घ्यम् ॥ हिम-
घ्नाय तमोघ्नाय रक्षोघ्नाय च ते नमः ॥ कृत-
घ्नघ्नाय सत्याय तस्मै सूर्यात्मने नमः ॥ १२० ॥

श्रीसूर्याय सांगाय सपरिवाराय श्रीसूर्यनारायणायेदमर्घ्यम् ॥ ११९ ॥ जाडेका अंधेरेका और राक्षसोंका नाश करनेवाले आपको प्रणाम है कृतघ्नके नाशक सत्वरूप उन सूर्यात्माको प्रणाम है ॥ १२० ॥

जयो जयश्च विजयो जितप्राणो जितश्रमः ॥
मनोजवो जितक्रोधो वाजिनः सप्त कीर्तिताः
॥ १२१ ॥ हरितहयरथं दिवाकरं कनकम-
याम्बुजरेणुपिञ्जरम् ॥ प्रतिदिनमुदये नवं
नवं शरणमुपैमि हिरण्यरेतसम् ॥ १२२ ॥

जय, अजय, विजय, जितप्राण, जितश्रम, मनोजव, जितक्रोध ये सात सूर्यके घोडे हैं ॥ १२१ ॥ हरे घोडोंके रथवाले सुवर्णके कमलकी रजके समान पीतवर्ण प्रति-

दिन उदयके समय नयेही नये दीखनेवाले हिरण्यरेता सूर्यको शरण प्राप्त होता हूं ॥ १२२ ॥

न तं व्यालाः प्रबाधन्ते न व्याधिभ्यो भयं भवेत् ॥ न नागेभ्यो भयं चैव न च भूतभयं क्वचित् ॥ १२३ ॥ अग्निशत्रुभयं नास्ति पार्थिवेभ्यस्तथैव च ॥ दुर्गतिं तरते घोरां प्रजां च लभते पशून् ॥ १२४ ॥

इसका जप करनेवालेको सर्प कष्ट नहीं देते रोगोंसे भय नहीं होता हाथीसे भय नहीं होता और कहीं भूतका भय नहीं होता ॥ १२३ ॥ अग्नि और शत्रुका भय नहीं होता और राजभय नहीं होता भयंकर दुर्गतिको पार करता है संतान और पशु बहुत होते हैं ॥ १२४ ॥

सिद्धिकामो लभेत् सिद्धिं कन्याकामस्तु कन्यकाम् ॥ एतत् पठेत् स कौन्तेय भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ १२५ ॥ अश्वमेधसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च ॥ कन्याकोटिसहस्रस्य दत्तस्य फलमाप्नुयात् ॥ १२६ ॥

सिद्धि चाहे उसे सिद्धि मिले कन्याकी इच्छावालेको कन्या मिले । हे कौंतेय ! इसे भक्तियुक्त मनसे पाठ करे ॥ १२५ ॥ हजार अश्वमेध सौ वाजपेय और हजार करोड कन्यादानका फल प्राप्त हो ॥ १२६ ॥

इमादित्यहृदयं योऽधीते सतत नरः ॥
सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोके महीयते
॥ १२७॥ नास्त्यादित्यसमो देवो नास्त्या-
दित्यसमा गतिः ॥ प्रत्यक्षो भगवान्विष्णु-
र्येन विश्वं प्रतिष्ठितम् ॥ १२८ ॥

इस आदित्यहृदयको जो बराबर पाठ करे वह सब पापोंसे शुद्ध होकर सूर्यलोकमें पूजित होता है ॥ १२७ ॥ सूर्यके समान कोई देवता नहीं सूर्यके समान गति देनेवाले और नहीं सूर्य प्रत्यक्ष विष्णु भगवान् हैं और उन्हींसे संसार प्रतिष्ठित है ॥ १२८ ॥

नवतिर्योजनं लक्षं सहस्राणि शतानि च ॥
यावद्घटीप्रमाणेन तावच्चरति भास्करः॥ १२९॥
गवां शतसहस्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फ-

लम् ॥ तत्फलं लभते विद्वान् शान्तात्मा
स्तौति यो रविम् ॥ १३० ॥

सूर्य आध घडीमें नौ लाख एक हजार एक सौ योजन चलते हैं ॥ १२९ ॥ अच्छी तरह विधिपूर्वक एक लाख गोदान करनेका जो फल हो उसे शांतचित्तसे जो सूर्यकी स्तुति करे वह पाता है ॥ १३० ॥

योऽधीते सूर्यहृदयं सकलं सफलं भवेत् ॥
अष्टानां ब्राह्मणानां च लेखयित्वा समर्पयेत्
॥ १३१ ॥ ब्रह्मलोके ऋषीणां च जायते
मानुषोऽपि वा ॥ जातिस्मरत्वमाप्नोति
शुद्धात्मा नात्र संशयः ॥ १३२ ॥

जो आदित्यहृदयका पाठ करे उसका संकल्प सफल होता है इसे लिखाकर आठ ब्राह्मणोंको समपर्ण करे १३१ वह मनुष्य ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है अथवा ऋषियोंमें जन्म लेता है अथवा मनुष्य हो तो शुद्धात्मा और पहले जन्मकी बातको स्मरण रखनेवाला होता है ॥ १३२ ॥

अजाय लोकत्रयपावनाय भूतात्मने गोप-
तये वृषाय ॥ सूर्याय सर्वप्रलयान्तकाय

नमो महाकारुणिकोत्तमाय ॥ १३३ ॥
विवस्वते ज्ञानभृदन्तरात्मने जगत्प्रदीपाय
जगद्धितैषिणे ॥ स्वयंभुवे दीप्तसहस्रचक्षुषे
सुरोत्तमायामिततेजसे नमः ॥ १३४ ॥

अजन्मा तीन लोकोंको पवित्र करनेवाले भूतात्मा गौओंके स्वामी वृष अर्थात् धर्मरूप सब प्रलयके अंतक सूर्यको प्रणाम और बडे करुणावालोंमें उत्तमको प्रणाम है ॥ १३३ ॥ ज्ञानवालोंके अन्तरात्मा संसारके दीपक संसारके हित चाहनेवाले विवस्वान्को प्रणाम स्वयंभू हजार नेत्रवाले देवताओंमें श्रेष्ठ विना प्रणाम तेजवाले सूर्यको प्रणाम हो ॥ १३४ ॥

सुरैरनेकैः परिसेविताय हिरण्यगर्भाय हिर-
ण्मयाय ॥ महात्मने मोक्षपदाय नित्यं
नमोऽस्तु ते वासरकारणाय ॥ १३५ ॥
आदित्यश्चार्चितो देव आदित्यः परमं
पदम् ॥ आदित्यो मातृको भूत्वा आदित्यो
वाङ्मयं जगत् ॥ १३६ ॥

अनेक देवता जिनकी सेवा करें हिरण्यगर्भ हिरण्मय महात्मा मोक्षपद देनेवाले और दिनके कारण सूर्यको नित्य प्रणाम है ॥ १३५ ॥ आदित्य पूजित देव हैं आदित्य परमपददाता हैं आदित्य अक्षर होकर वाणीका विषय सब संसार आदित्यही है ॥ १३६ ॥

आदित्यं पश्यते भक्त्या मां पश्यति ध्रुवं नरः ॥ आदित्यं पश्यतेऽभक्त्या न स पश्यति मां नरः ॥ १३७ ॥ त्रिगुणं च त्रितत्त्वं च त्रयो देवास्त्रयोऽग्नयः ॥ त्रयाणां च त्रिमूर्तिस्त्वं तुरीयस्त्वं नमोऽस्तु ते ॥ १३८ ॥

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक सूर्यका दर्शन करता है वह निश्चय मेराभी दर्शन करता है और जो सूर्यका दर्शन भक्तिपूर्वक नहीं करता है वह मेरेकोभी नहीं देख सकता है ॥ १३७ ॥ सत्वादि तीन गुणवाले प्रकृति पुरुष और ईश्वर तीन तत्वरूप तीन देवतारूप तीन गार्हपत्यादि अग्निरूप तीन कालोंमें तीन मूर्ति धारण करनेवाले और तुरीय अर्थात् परमात्मरूप हो सो आपको प्रणाम है ॥ १३८॥

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थि-
तिनाशहेतवे ॥ त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधा-
रिणे विरिञ्चिनारायणशंकरात्मने ॥१३९॥
यस्योदयेनेह जगत्प्रबुध्यते प्रवर्तते चाखि-
लकर्मसिद्धये ॥ ब्रह्मेन्द्रनारायणरुद्रवन्दि-
तः स नः सदा यच्छतु मङ्गलं रविः ॥१४०॥

संसारके मुख्य नेत्र संसारकी उत्पत्ति पालना और नाशके कारण देवत्रयीरूप तीनों गुणोंके स्वरूपको धारण करनेवाले और ब्रह्मा विष्णु और शिवरूप सूर्यको प्रणाम है ॥ १३९ ॥ जिनके उदयसे संसार जागता है और सब कामोंकी सिद्धिके लिये प्रवृत्त होते हैं वे ब्रह्मा इन्द्र नारायण और देवताओंसे प्रणाम किये हुए सूर्यदेव हमारा सदा मंगल करो ॥ १४० ॥

नमोऽस्तु सूर्याय सहस्ररश्मये सहस्रशाखा-
न्वितसंभवात्मने ॥ सहस्रयोगोद्भवभावभा-
गिने सहस्रसंख्यायुगधारिणे नमः ॥१४१॥
यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं रत्नप्रभं तीव्र-

मनादिरूपम् ॥ दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च
पुनातु मा तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४२ ॥

हजार किरणोंवाले हजार शाखावाले वेदके उत्पत्ति-स्थान हजारों योगोंसे उत्पन्न भक्तिके भागी और हजारों संख्यावाले युगोंको धारण करनेवाले सूर्यको प्रणाम हो ॥ १४१ ॥ प्रकाश करनेवाला विशालरत्नके समान कांतिवाला तीव्र अनादिरूपवाला दरिद्रता और दुःखका नाश करनेवाला सूर्यका प्रार्थना करने योग्य मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १४२ ॥

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं विप्रैः स्तुतं
भावनमुक्तिकोविदम् ॥ तं देवदेवं प्रणमामि
सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४३ ॥
यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यं
त्रिगुणात्मरूपम् ॥ समस्ततेजोमयदिव्य-
रूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४४ ॥

जिसे देवगण पूजते हैं ब्राह्मण स्तुति करते हैं भक्ति करनेवालोंको मुक्तिदायक देवोंके देव सूर्यको प्रणाम

करता हूं उस सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १४३ ॥ जो ज्ञानसमूहरूप है अगम्य है तीनों लोकोंके पूज्य है तीन गुणोंके आत्मरूप है सब तेजोंका दिव्यरूप है वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १४४ ॥

यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ॥ तत्सर्वपापक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४५ ॥
यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं यदृग्यजुस्सामसु संप्रगीतम् ॥ प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४६ ॥

जो गूढ है बुद्धिसे जाना जाता है लोगोंके धर्मको बढाता है और उनके सब पापोंका नाश करता है वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १४५ ॥ जो रोगनाशमें चतुर है जिसे ऋग्वेद यजुर्वेद और सामवेद गाते हैं जिससे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक प्रकाशित होते हैं वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १४६ ॥

यन्मण्डलं वेदविदो विदन्ति गायन्ति यच्चा-
रणसिद्धसंघाः ॥ यद्योगिनो योगजुषां च
संघाः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१४७॥
यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं ज्योतिश्चकुर्या-
दिह मर्त्यलोके ॥ यत्कालकालादिमनादि-
रूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४८ ॥

जिसे वेदज्ञ लोक कहते हैं और जिसे चारण और सिद्धोंके समूह गाते हैं और जिसे योगी और योगसेवियोंके समूह बखानते हैं वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १४७ ॥ जो सब लोकोंमें पूजित है और मनुष्यलोकमें प्रकाश करता है जो कालके कालकाभी आदि है अनादिरूप है वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १४८ ॥

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखाख्यं यदक्षरं पाप-
हरं जनानाम् ॥ यत्कालकल्पक्षयकारणं
च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १४९ ॥
यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धमुत्पत्तिरक्षाप्र-

लयप्रगल्भम् ॥ यस्मिञ्जगत् संहरतेऽखिलं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १५० ॥

जो विष्णु और ब्रह्मारूप है जो अक्षर अर्थात् नाशरहित है जो लोकोंके पापको दूर करता है और जो काल और कल्पके नाशका कारण है वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १४९ ॥ जो संसारको रचनेवालोंमें प्रसिद्ध है और संसारकी उत्पत्ति रक्षा और प्रलयमें कुशल है और जिसमें सारा संसार लीन हो जाता है वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १५० ॥

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोरात्मा परं धाम विशुद्धतत्त्वम् ॥ सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १५१ ॥ यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारणसिद्धसंघाः ॥ यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १५२ ॥

जो सर्वव्यापी विष्णुका स्वरूप है उत्कृष्ट तेज है और शुद्धतत्त्व है और जो सूक्ष्म अंतरवाले योगमार्गोंसे जाना जाता है वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र

करो ॥ १५१ ॥ जिसको ब्रह्मज्ञानी कहते हैं और जिसे सिद्ध चारणोंके समूह गाते हैं जिसे वेदज्ञ लोक स्मरण करते हैं वह सूर्यका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १५२ ॥

यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् ॥ तत्सर्ववेदं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १५३ ॥
मङ्गलाष्टमिदं पुण्यं यः पठेत्सततं नरः ॥
सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोके महीयते ॥ १५४ ॥

जिसका वेदज्ञानी बखान करते हैं और जिसे योगी लोक योगमार्गसे पहुँचते हैं उस सर्ववेदरूप सूर्यको प्रणाम करता हूं उसका प्रार्थनीय मंडल मेरेको पवित्र करो ॥ १५३ ॥ इस पवित्र मंगलाष्टकको जो मनुष्य सदा पढे वह सब पापोंसे शुद्ध स्वरूप होकर स्वर्गलोकमें पूजित होता है ॥ १५४ ॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ॥ केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतश-

ङ्खचक्रः ॥ १५५ ॥ सशङ्खचक्रं रविमण्डले
स्थितं कुशेशयाक्रान्तमनन्तमच्युतम् ॥
भजामि बुद्ध्या तपनीयमूर्तिं सुरोत्तमं
चित्रविभूषणोज्ज्वलम् ॥ १५६ ॥

सूर्यमंडलमें विराजमान कमलासनपर बैठे हुए बिजावटवाले मकराकारकुंडलवाले मुकुटवाले और हारवाले सुवर्णके समान शरीरवाले शंख और चक्र हाथोंमें लिये श्रीनारायणका ध्यान करना ॥ १५५ ॥ शंख चक्र लिये हुए सूर्यमंडलमें स्थित कमलपर विराजमान अनंत दीप्त मूर्तिवाले नानाप्रकारके भूषणोंसे शोभायमान अच्युत भगवान्को बुद्धिसे भजन करता हूं ॥ १५६ ॥

एवं ब्रह्मादयो देवा ऋषयश्च तपोधनाः ॥ कीर्तयन्ति सुरश्रेष्ठं देवं नारायणं विभुम् ॥ १५७ ॥
वेदवेदाङ्गशरीरं दिव्यदीप्तिकरं परम् ॥
रक्षोघ्नं रक्तवर्णं च सृष्टिसंहारकारकम् ॥ १५८ ॥

इस प्रकार ब्रह्मादि देवता और तपही जिनका धन ऐसे ऋषिलोक देवताओंमें श्रेष्ठ विभु सर्वव्यापी नारायणको कीर्तन करते हैं ॥ १५७ ॥ वेद और वेदांगही जिनका

शरीर है दिव्यदीप्ति करनेवाले राक्षसोंका नाश करनेवाले लालवर्णवाले और सृष्टिका संहार करनेवाले श्रेष्ठ सूर्यको प्रणाम करता हूं ॥ १५८ ॥

एकचक्रो रथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः ॥
स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः
॥ १५९ ॥ आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु
दिवाकरः ॥ तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं
तु प्रभाकरः ॥ १६० ॥

जिनका एक पहियेका दिव्य सुवर्णभूषित रथ है वे कमल हाथमें रखनेवाले दिवाकर भगवान् मेरेपर प्रसन्न हो ॥ १५९ ॥ प्रथम आदित्य नाम है दूसरा दिवाकर नाम है तीसरा भास्कर नाम है और चौथा प्रभाकर नाम है ॥ १६० ॥

पञ्चमं तु सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः ॥
सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः ॥ १६१ ॥
नवमं दिनकृत् प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः ॥
एकादशं त्रयीमूर्तिर्द्वादशं सूर्य एव च ॥ १६२ ॥

पांचवां सहस्रांशु है छठा त्रिलोचन है सातवां हरिदश्व है और आठवां विभावसु है ॥ १६१ ॥ नवां दिनकृत् है दसवां द्वादशात्मा नाम है ग्यारहवां त्रयीमूर्ति है बारहवां सूर्य है ॥ १६२ ॥

द्वादशादित्यनामानि प्रातःकाले पठेन्नरः ॥
दुःस्वप्ननाशनं चैव सर्वदुःखं च नश्यति॥१६३॥
दद्रुकुष्ठहरं चैव दारिद्र्यं हरते ध्रुवम् ॥
सर्वतीर्थप्रदं चैव सर्वकामप्रवर्धनम् ॥ १६४ ॥

इन सूर्यके बारह नामोंको जो प्रातःकालको पढे उनका दुःस्वप्न और सब दुःख नष्ट हो जाता है ॥ १६३॥ दाद कोढ मिटे दरिद्रता दूर हो निश्चयही सब तीर्थोंका फल देनेवाला और सब इच्छाओंको पूर्ण करनेवाला है ॥ १६४ ॥

यः पठेत्प्रातरुत्थाय भक्त्या नित्यमिदं नरः॥
सौख्यमायुस्तथारोग्यं लभते मोक्षमेव च
॥ १६५ ॥ अग्निमीळे नमस्तुभ्यमिषेत्वोर्जे
स्वरूपिणे ॥ अग्न आयाहिवीतिस्त्वं नमस्ते
ज्योतिषां पते ॥ १६६ ॥

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक इसे सबेरे उठकर नित्य पाठ करे वह सुख बडी आयु नीरोगता अंतमें मोक्षको पाता है ॥ १६५ ॥ अग्निमीळे आदि ऋग्वेदरूप आपको प्रणाम है इषेत्वोर्जे आदि यजुर्वेदरूप आपको प्रणाम है और अग्न आयाहि वीतये आदि सामवेदरूप तेजोंके स्वामी आपको प्रणाम है ॥ १६६ ॥

शन्नो देवि नमस्तुभ्यं जगच्चक्षुर्नमोऽस्तु ते ॥
पञ्चमायोपवेदाय नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥१६७॥
पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भसमद्युतिः ॥
सप्ताश्वरथसंयुक्तो द्विभुजः स्यात् सदा रविः १६८

शन्नोदेवी आदि अथर्ववेदरूप आपको प्रणाम है । हे संसारके नेत्र ! आपको प्रणाम है और पांचवें उपवेदरूप आपको प्रणाम है ॥ १६७ ॥ सूर्य भगवान्‌के कमलका आसन है कमल हाथमें है कमलके गर्भ समान शोभावाले सात घोडोंका रथवाले और दो हाथवाले हैं ॥ १६८ ॥

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ॥ जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥ १६९ ॥ उदयगिरिमुपेतं भास्करं प-

द्महस्तं निखिलभुवननेत्रं रक्तरत्नोपमेयम् ॥
तिमिरकरिमृगेन्द्रं बोधकं पद्मिनीनां सुर-
वरमभिवन्दे सुन्दरं विश्ववन्द्यम् ॥ १७० ॥

इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आदि-
त्यहृदयस्तोत्रं संपूर्णम् ।

जो मनुष्य नित्य सूर्यको प्रणाम करते हैं उसके हजार जन्मोंमेंभी दरिद्रता नहीं होती ॥ १६९ ॥ उदयाचलपर प्राप्त कमल हाथमें लिये हुए सब संसारके नेत्र लाल रत्नके समान अंधकार हाथीके लिये सिंहरूप कमलोंको खिलानेवाले देवताओंमें श्रेष्ठ संसार जिन्हें प्रणाम करता है ऐसे सुंदर सूर्यको प्रणाम करता हूं ॥ १७० ॥

इति श्रीआदित्यहृदयभाषा संपूर्ण ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

**गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,**
**लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो**
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅंक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट.
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

**गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,**
**लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो**
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०१०६१.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००५८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS